51. विशालभारती

पंजीयन संख्या / RNI No.- UPHIN/2017/74660

ISSN: 2581-6985

प्रवासी जगत

प्रवासी जगत का साहित्य, साहित्यकार व संस्कृति केंद्रित पत्रिका

खंड 3, अंक 2; पौष-फाल्गुन 2076 / जनवरी-मार्च, 2020

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

Chetna Shikshan Prasarak Mandal Vaijapur
KALA VARISHTA MAHAVIDYALAYA
Sawangi, By Pass Road, Aurangabad-431008

अनुक्रम

क्र.सं.	आलेख का नाम	लेखक का नाम	पृ०सं०
•	प्रधान संपादक की कलम से... विदेशी विद्यार्थियों को हिंदी भाषा और साहित्य का अध्यापन तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान	प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय	5-9
•	संपादकीय	प्रो. उमापति दीक्षित	10-14
1.	मॉरीशस के प्रवासी जीवन में लोकसाहित्य की भूमिका	प्रियंका कुमारी	15-23
2.	सुधा ओम ढींगरा की काव्यकृति 'सरकती परछाइयाँ' में बिम्बविधान	रवीन्द्र सिंह	24-30
3.	प्रवासी जीवन : तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों के संदर्भ में	डॉ. प्रियंका	31-37
4.	हिंदी की वैश्विक स्वीकृति : स्वरूप एवं संभावनाएँ	डॉ. यशोधरा राठौर	38-44
5.	पुष्पिता अवस्थी की कहानियों में अभिव्यक्त कैरेबियाई प्रवासी जीवन एवं उनका संघर्ष	अभिनव	45-54
6.	युद्ध, भूख, दर्द और स्त्री यौन शोषण : क्रोएशिया प्रवास डायरी के झरोखे से	सदफ इश्त्याक शर्मिला सक्सेना	55-63
7.	स्त्री विमर्श की गाथा और वैश्विक कहानीकार पुष्पिता अवस्थी का कथा संसार	डॉ. विशाला शर्मा	64-69
8.	ब्रिटेन की हिंदी-सेवी संस्थाएँ	डॉ. विनय कुमार शर्मा	70-77
9.	प्रवासी जीवन की विसंगतियाँ	डॉ. प्रणु शुक्ला	78-83
10.	सुषम बेदी कृत 'मोरचे' उपन्यास में स्त्री विमर्श	पूनम पाधा	84-90

स्त्री विमर्श की गाथा और वैश्विक कहानीकार पुष्पिता अवस्थी का कथा संसार

डॉ. विशाला शर्मा

भारतीय नारी की जीवनी त्रासदियों को समाज के समक्ष लाने का कार्य साहित्य के द्वारा किया गया। नारी के पक्ष में इस देश में कई कानून बने किंतु फिर भी पुरुष की दासता से उसकी मुक्ति संभव नहीं हो सकी तब साहित्य ने हिंसा की वेदी से स्त्री को हटाने के लिए सतत प्रयास किये। जर्जर परंपराओं, रुढ़ियों, शोषण के शिकंजे से आजादी और अस्मिता का मार्ग दिखलाने में साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका है। अन्याय, शोषण, अत्याचार और असमानता के विरुद्ध एक लंबी लड़ाई लड़ने के लिए साहस की आवश्यकता थी और वह साहस साहित्य ने पैदा किया। प्रवासी साहित्य के अध्ययन- अध्यापन के दौरान भारतीय और विदेशी स्त्रियों की स्थिति में थोड़ी बहुत स्थितियों में अंतर दिखाई देता है। किंतु पुरुष का नारी के प्रति दृष्टिकोण लगभग सभी देशों में एक जैसा है। पुष्पिता अवस्थी जब विभिन्न सामाजिक प्रश्नों पर अपनी कलम चलाती हैं तो उनके साहित्य में कई ऐसे स्त्री पात्र हमारे समक्ष आते हैं जो पुरुषीय मानसिकता के शिकार हैं। अधिकतर भारतीय स्त्रियाँ बेटी, माँ और पत्नी की भूमिका में निरंतर हिंसा का शिकार होती हैं।

पुष्पिता जी अपनी गोखरु कहानी में तीन पीढ़ियों की महिलाओं का चित्रण करती है। जो एक ही परिवार से हैं। इसमें कादंबरी, उसकी माँ और माँ की नानी। इस कहानी की बूढ़ी नानी विचारों से समय से बहुत आगे की सोच रखती है। उन्होंने जीवन में कभी घुंघट नहीं निकाला किंतु अपने ही बेटी और बहु के व्यवहार से आहत होकर वह अपना घर छोड़कर बेटी के यहाँ रहने चली जाती है। वही कादंबरी अपने पति की मृत्यु के बाद पढ़ा-लिखाकर अपने बेटे को विदेश भेजती है, वह पुत्र को पाल रही थी जिससे प्रताप वहाँ अपने मनोनुकूल नौकरी हासिल कर सके। पुत्र की जरूरत कम से कम करती गई। उसका बस चलता तो पेट एक कौर का कर लेती ओर देह एक हाथ

Principal
Chetna Shikshan Prasarak Mandal Vaijapur
KALA VARIDHI MAHAVIDYALAYA
Sawangi, By Pas Road, Aurangabad-431008

थी। कादंबरी ने अपने खर्चों को पूरा करने के लिए बच्चों के एक स्कूल में नौकरी भी ले ली थी।"

अपने बेटे प्रताप की प्रतीक्षा में घर बेचकर सारा पैसा आने वाली बहू और बेटे के भविष्य के लिए जमा करती है और बेटा विदेश में अपने लिए लड़की ढूँढ़ लेता है। यही ठंडे बस्ते में पिघलता लावा कहानी में कावेरी और सुधा जैसे दो चरित्र पाठकों के सामने आते है। सुधा एक सशक्त पात्र है। प्रथम दर्जे की अफसर होने के नाते कहीं भी पुरुषों से कम नहीं है। ईमानदार और कर्मठ अधिकारी वो कभी नहीं चाहती कि स्त्री होने के नाते उसे किसी तरह के काम में छूट मिले। वो कावेरी से कहती है, "विभाग ने कभी मुझे स्त्री नहीं समझा और न मैंने खुद को कभी स्त्री। स्त्री होने का न मैंने कभी कोई प्रिवलेज़ ही लिया और न एडवांटेज। अधिकारी हूँ अधिकारी की तरह काम करती हूँ जैसे कोई भी आनेस्ट हार्डवर्कर अधिकारी करेगा। बगैर कोई अतिरिक्त रोना रोते हुए।"

उच्च पदस्थ कमिश्नर रैंक की अधिकारी होने के साथ-साथ एक साहसी महिला भी है। कई तरह के दबाव के चलते भी वो अटल रहकर अपनी ड्यूटी निभाती है। एक वफादार और ईमानदार चरित्र से परिचय लेखिका ने हमारा करवाया है। साथ ही एक सशक्त महिला पात्र की वाणी में किस तरह का दमखम होना चाहिए यह भी कावेरी और सुधा के संवादों से स्पष्ट होता। "कम्मो मेरे घुटने चाहे टूट जाएँ, लेकिन मैं पॉलिटी अपने जीते जी न होने दूँगी। वह भी ढाई करोड़। सरकारी नौकर हैं हम लोग कम-से-कम रोजी के प्रति इतनी तो वफादारी हो। जो अपनी रोजी के प्रति ईमानदार नहीं होगा वह किसी के प्रति क्या? फिर मैं तो नौकरी को अपना पहला घर मानती हूँ।"[3]

पुरुष मानसिकता के प्रतिकृति एक घृणा का भाव सुधा के मन में जन्म ले लेता है। निडरता के साथ सदैव पुरुषों की आँखों में आँखें डालकर सीधी बात करना उसके स्वभाव का हिस्सा है। वो कावेरी से कहती है, "तुम इन मर्दों को नहीं जानती औरत की देह से अपनी आँखें सेंकने के लिए बतियाने का कारण खोजते हैं चेहरे से नीचे ही आँखें टिकाना चाहते हैं और मैंने तय कर रखा है कि अपनी आँखों के नीचे किसी की आँखें उतरने नहीं दूँगी। अगर उतरी तो निकाल लूँगी। कटार है आँखें कटार"[4]

इतनी सशक्त महिला की जब हत्या हो जाती है तो समाज के समक्ष एक प्रश्न चिह्न उपस्थित होता है। जिस कार्यालय और कार्य के खातिर उसने अपने परिवार को अहमियत नहीं दी वही कार्यालय के लोग उसकी मौत का कारण उसका चरित्रहीन होना घोषित करते हैं इतना ही नहीं उसके केस की फाइल भी गायब कर दी जाती है। कावेरी की शादी सुधा के लिए सपना था। लेकिन खुद शादी के बाद बेटे का साथ

लेकर नौकरी की खातिर इलाहाबाद में रही। उसने जिससे प्रेम किया उससे विवाह भी किया था। लोगों का मानना था, उसका चाल-चलन ठीक नहीं था और इसीलिए उसके पति ने उसकी हत्या करवाई। यह सब सुनकर कावेरी सोचती है कि सुधा के चरित्र पर कितने ही लांछन लगाए जाएँ लेकिन वह प्रार्थना की तरह पवित्र है। हमारे देश में महिलाओं में साक्षरता का प्रतिशत तो बड़ा है, किंतु पुरुषी मनोवृत्ति के चलते वे हमेशा बर्बर हिंसा की शिकार होती है। इस देश में प्रेम संबंधों के कारण भी पुरुष की हिंसक प्रवृत्ति चरम सीमा पर पहुँच जाती है। स्त्री जाति के प्रति हिंसा को रोकने हेतु समाज के मनोविज्ञान में परिवर्तन लाना आवश्यक है और इसीलिए इस लड़ाई का नेतृत्व पुरुष वर्ग को करना होगा। बुद्धिजीवियों, लेखकों, कवियों और कलाकारों से लेकर अध्यापकों का भी दायित्व बनता है कि वे स्त्रियों की सम्मान की लड़ाई में भागीदार बनें।

पुष्पिता जी की कंचा कहानी में हेमा जैसी स्वतंत्र किंतु आत्मविश्वासी लड़कियों की समाज को बेहद आवश्यकता है। जो अंजान शहर में नौकरी की खातिर आई है। अपने लिए रहने के लिए एक मकान ढूँढना कितना मुश्किल है यह अनुभव उसे बहुत कुछ सिखा देता है। वह लड़कियों के छुईमुईपन से दूर है और उसकी भाषा बबूल की डाल की तरह कटीली है। अपने पिता की उम्र के श्रीनाथ जी के साथ जब वह मकान ढूँढने जाती है तो लोग उसे गलत नजर से देखते हैं। लोगों के इस नजरिये से वह आहत होती है। किंतु निडरता के साथ ऐसा उत्तर देती है जो उसके व्यक्तित्व को और अधिक उजला कर देता है। "कफर उस प्रिंसिपल को बोलना कुछ इस अंदाज में था जैसे वह हेमा को कलेक्टर सर्टिफिकेट दे रही हो। सीधे हेमा के वजूद को चोट लगी। उसका अहम आहत हुआ। उसका स्त्रीत्व घायल हुआ। हेमा के लिए एक पल ठहरना जलती जमीन पाँव धरने की तरह था फिर भी वाणी में संयम बरतते हुए हेमा ने प्रिंसिपल के चेहरे पर नाखून की तहर अपनी आँखें गड़ाते हुए कहा, "जिसकी गुंजाइश कम-से-कम हो उसे मैं देखना भी नहीं चाहती हूँ।' शब्द पूरे होते ही हेमा ने प्रिंसिपल की ओर पीठ कर ली। श्रीनाथ के साथ पलट ली। श्रीनाथ अकेली लड़की के स्वाभिमान का फूटता लावा देख रहा था। वह अकेली है लेकिन सूरजमुखी-सी दमकती दीप्ति।

समाज में निडर होकर जीने का साहस जरूरी है। वह कहती हैं, "स्त्री के लिए भुक्खड़ हुए समाज में जीना एक अकेली औरत के लिए सबसे कठिन चुनौती है। बहुरुपिया समाज, दोगला चरित्र-आत्मीयता का आडंबर पर भीतर-ही-भीतर ख्वाब-बचा लेने का संकल्प जिससे वह लगातार जुझती है हर दिन, हर शाम।"

विधवा स्त्रियों की दशा पर भी कज़रोटा कहानी में प्रकाश डाला गया है। विधवा स्त्री ससुराल और मायके दोनों जगह अभागिनी मानी जाती है। विधवाओं की दुर्दशा वृंदावन और वाराणसी की गलियों में देखी जा सकती है। जब गंगा के घाट पर कांता

और सीमा जा रहे थे तब एक विधवा प्रौढ़ स्त्री, हथेली फैलाकर उनसे भीख मांगती है तब सीमा कांता से कहती है, "यह भिखारी है भी नहीं, बनाई गई है, घरवालों के द्वारा। विधवा होने पर मोक्ष के नाम पर यहाँ घाट पर छुट्टा जानवरों की तरह छोड़ दी गई है और यहाँ दिनभर सीढ़ियाँ चढ़ते-उतरते माँगते-खाते इनके भीतर फिजिकल स्टेमिना डेवलेप हो जाता है कि इनकी उम्र बढ़ जाती है। विधवाओं और बुढ़ियों के लिए बने घाट के आश्रम अब विदेशियों के लिए रेस्तराँ और गेस्ट हाउस में तब्दील हो रहे है। सरकारी फाइलों में सिर्फ गंगा-महोत्सव दर्ज होता है।"

इस कहानी मे कांता प्रथम दर्जे की अधिकारी है। निडर, साहसी और कर्तव्य परायण एक उच्च पदस्थ अधिकारी स्त्री सुशील से प्रेम करती है। किंतु ब्राह्मण लड़की को बहू बनाने के लिए सुशील के पिताजी तैयार नहीं होते क्योंकि ऐसा करने से अपनी जाति के लड़के से उनकी बेटी का ब्याह नहीं हो पाएगा सुशील और कांता की पोस्टिंग अलग-अलग शहरों में होती रही, किंतु कांता ने कभी अपनी शादी के लिए सुशील से जिद नहीं की। लेखिका कहती है, "एक पुरुष शायद कभी नहीं जान पाए कि उच्च पदस्थ अधिकारी स्त्री भी कितनी कशिश से करती है, किसी को प्यार। चिंता, दु:ख और विवशता की उताल तरंगों को पार कर वैसे बचा रखती है अपना जीवन अपने सपने। सुशील को अपने, भीतर में होने को लेकर जीती रही है। गढ़ती रही कल्पना में उसे और अपने सपने। सब से छुपाकर अपने अस्तित्व में बचाए रखती है अपने सुशील को, अपने एकनिष्ठ 'प्यार' को सहेजे-सजाए रखती है, अपने मन की अस्मिता के खातिर।

एक दिन जब कांता कोर्ट पहुँचती है, उच्च अधिकारियों का फोन आता है और उसे तुरंत नया गाँव जाने के लिए कहा जाता है। उस गाँव में एक महिला पर अत्याचार हुआ है वह बिना खाना खाए जीप लेकर घटना स्थल पर पहुँचती है। "गाँव में एक स्त्री निर्वस्त्र घुमाई गई। पच्चीस-तीस साल पहले फूलन इस हादसे की शिकार हुई थी तो नियति ने उसे दस्यू सुंदरी बनने को मज़बूर किया। तीस वर्षों बाद फिर यह दुर्घटना। क्या हमारा समय किसी आदमखोर राक्षस की गिरफ्त में फंस गया है कि निकाले नहीं निकल रहा है।"

वही दो शब्द कहानी में अंकिता देर तक ऑफिस में बैठकर काम करती है क्योंकि उसकी देह के लिए घर है, लेकिन मन बिल्कुल अकेला है और इस अकेलेपन को दूर करने के लिए वह अपने आप को काम में व्यस्त रखना चाहती है। रिक्शा में एक राहगीर से उसकी मुलाकात होती है अपने मन की कुछ बातें वह उसके साथ साझा करती है और सोचती है, "स्वावलंबी स्त्रियों तक मैं संवेदनाओं और भावनाओं के स्तर पर आत्मनिर्भरता क्यों नहीं आ पाती है? क्या संवेदनाओं का तोष पति या पुरुष मित्र के

अपनेपन में ही संभव है? 'आत्मतृप्ति' उसे अपने से क्यों नहीं बल्कि किसी पुरुष मित्र को अपना बना लेने के बाद ही क्यों होती है? जबकि अपने आपसे अधिक अपना और कौन हो सकता है?"

इनीका कहानी में माँ को जब उसके पिता तलाक देकर चले जाते हैं तो इनीका के संवेदनशील मन में अपनी माँ और नानी के दु:ख और दर्द धरोहर के रूप में इकट्ठा हो जाते है। माँ के इस रूप को इनीका कभी नहीं भूल पाती। त्याग, प्रेम और बच्चों के प्रति कर्तव्य सदैव स्त्री ही निभाती है। माँ के कई त्याग उसकी स्मृतियों में बसे हुए है। "माँ के रूप में इनीका को याद है कि जब उसकी बेटी विदेश मंत्रालय की नौकरी की परीक्षा के लिए तैयारियाँ कर रही थी तब अपनी बेटी की पढ़ाई और तैयारी के लिए उसने एक माह की छुट्टी ली थी जिसका उसे वेतन नहीं मिला था। फिर भी उसने इस आर्थिक नुकसान को अपने संतान के मोह में सहा था जबकि उसके पिता उस समय एम्सटर्डम विश्वविद्यालय में प्रोफेसर थे। वे भी पढ़ा सकते थे लेकिन उस समय उनके पास बेटी को पढ़ाने-लिखाने की तैयार के लिए न तो समय था और न ही धैर्य।"

कथाकार युगीन समाज की उपज होते हैं और उनकी कथा का संबंध समाज में स्थित मानव की भावनाओं और विचारों से होता है। पुष्पिता अवस्थी की कहानियाँ सामाजिक जीवन के ताने-बाने में बुनी हुई हैं। जिसमें अस्तित्व बोध भी है आत्मविश्वास भी है। मध्यवर्गीय नारी अपने चारों और फैले अन्याय, अत्याचार, शोषण, अमानवीयता के खिलाफ खुला प्रतीवाद भी करती है। जिसके अंतर्गत कजरौटा कहानी की कांता, कुंचा कहानी की हेमा, ठंडी बस्ते में पिघलता लावा की सुधा जैसे पात्र आत्मसम्मान के साथ अपना जीवन जीना चाहते हैं। चाहे नौकरी पेशा महिला हो अथवा घरेलू महिला, बढ़ी नारी जैसे पात्र समय से बहुत आगे की सोच रखते हैं। पिनास जैसी करुणामयी महिला जो अपना जीवन लोगों के सेवा सुश्रुषा में बिताती है। वही लेखिका पैसे की चाहत में विदेशों में टीन एज की स्थिति से भी हमें वाकिफ कराती हैं वह लिखती है, "देह की वैश्यावृत्ति के साथ ड्रग्स को ढोने के लिए भी स्त्री-देह का जो उपयोग होता है वह भी एक तरह की वैश्यावृत्ति ही है। लेकिन देखिए बगैर अपराधबोध की भावना के अकेले ही महंगी-से महंगी कारों में दौड़ती फिरती है। इनके रक्षक अन्डरवल्ड के महत्वपूर्ण अनुभवी लोग हैं जिनका संबंध एक ही नहीं कई देशों के सरकारी अधिकारी और नेताओं से रहता है। सब कुछ व्हाईट कॉलर और खरा सिक्का है। पुलिस फोर्स यह बस जानती है लेकिन प्रमाण नहीं होने के कारण पकड़ नहीं पा रही है।"

साथ ही पुष्पिता जी ने नीदरलैंड डच महिलाओं की स्थिति वृद्धाश्रम में अपना जीवनयापन करने वाली महिलाओं के दु:ख-दर्द यूरोप में कामकाजी महिलाओं